सड़कों पर संगठन निर्माण : केपटाउन की सड़कों पर कचरा बीनने वालों का एक अध्ययन

यह सारां६ा कोनी बेन्सन एवं नन्दी वांका म्पीजीमा, इंटरनै६ानल लेबर रिसर्च ऐण्ड इन्फॉर्मे६ान ग्रुप (आईएलआरआईजी) द्वारा लिखित रिपोर्ट का एक सारां६ा है।

2009 के आखिर में वियेगो की ओर से ५ोधकर्ताओं के एक दल ने केपटाउन में कचरा बीनने वालों के बारे में जानकारियां इकट्ठा करने के लिए एक अध्ययन किया था। ५ोधकर्ता निम्नलिखित के बारे में और जानकारियां जुटाना चाहते थे :

- कचरा बीनने वाले कहां काम करते हैं?
- कचरा बीनने वाले कौन लोग हैं?
- वे क्यों और कैसे काम करते हैं?
- वे अपने काम को किस तरह देखते हैं?
- वे किन मुि६कलों का सामना करते हैं?
- रीसाइक्लिंग उद्योग उनसे कैसा बर्ताव करता है?

WIEGO
Women in Informal Employment Globalizing and Organizing

५ोधकर्ता ऐसे संगठनों के बारे में भी जानकारियां इकट्ठा करना चाहते थे जो इन कामगारों को मदद देते हैं। इस ५ोध का एक मकसद यह जानना था कि कचरा बीनने वाले संगठित/सामूहिक रूप से काम करने के लिए तैयार हैं या नहीं। प्रस्तुत पर्चे में ५ोधकर्ताओं के नतीजों, कचरा बीनने वालों की उम्मीदों और उनके बीच काम कर रहे संगठनों, उनकी चुनौतियां, बदलाव की संभावनाओं के बारे में चर्चा की गई है।

भूमिका

कचरा बीनने वाले दक्षिण अफ्रीका के रीसाइक्लिंग एवं कचरा प्रबंधन उद्योग का एक मूल्यवान मगर उपेक्षित हिस्सा रहे हैं। इस व्यवसाय में तरह-तरह के बहुत सारे लोग सिर्फ सामाजिक सुरक्षा के लिए ही नहीं बल्कि और भी कई उद्दे६यों से काम कर रहे हैं। उनमें बूढ़े बुजुर्ग भी ५ामिल हैं। बहुत सारी माएं अपने परिवारों का पेट पालने के लिए इस व्यवसाय में हैं। कई पार्टटाइम कामगार थोड़ी और आय के लिए ये काम करते हैं। यहां तक कि कई बच्चे भी जिंदा रहने के लिए बहुत जल्दी ही इस व्यवसाय में फंस चुके हैं। वि६वव्यापी आर्थिक संकट और बड़ी कंपनियों की पैसा बचाने की होड़ को देखते हुए दक्षिण अफ्रीका में आए दिन बहुत सारे लोग बेरोजगार होते जा रहे हैं। इनमें से ज्यादातर लोग कचरा बीनने जैसे काम करने लगते हैं और इस तरह अनौपचारिक ५ाहरी श्रम ५ाक्ति का हिस्सा बन जाते हैं।

रीक्लेमिंग या कचरा बीनने के काम में दूसरों द्वारा फेंक दी गई चीजों में से रीसाइक्लिंग या दोबारा इस्तेमाल के लायक चीजों को इकट्ठा किया जाता है। कपड़े, घरेलू सामान या इस तरह की दूसरी चीजों को लोग या तो खुद इस्तेमाल कर सकते हैं या दूसरों को बेच सकते हैं या उनसे नई चीजें बना सकते हैं। लोहा, तांबा, एल्युमीनियम, ५ाीट मैटल, प्लास्टिक, कांच, उपकरण, गत्ता, कागज आदि रीसाइक्लिंग योग्य चीजें होती हैं। कचरा बीनने वाले उन्हें बीन कर पुरानी चीजें खरीदने वाले केंद्रों पर बेच देते हैं। पुरानी चीजें खरीदने वाले इन केंद्रों को बाई-बैक सेंटर कहा जाता है। ये सेंटर इन चीजों को बड़े रीसाइक्लिंग उद्योगों को बेच देते हैं जहां इनसे नई चीजें बनाई जाती हैं।

केपटाउन में रीक्लेमिंग के लिए बहुत सारे ५ाब्द प्रचलित हैं। इनमें रीसाइक्लिंग, खनन, मीन्जा (जिंदा रहने की कोि६ा६ा), उकूज़िमामेला (खुद को सहारा देना), बीनना, काम करना, फेरी लगाना या भटकना या स्कॉर्रेलिंग (हमे६ाा तला६ा में रहना) आदि ५ाब्द प्रचलित हैं।

हालांकि लोग हमे६ाा ही बची-खुची और फेंक दी गई चीजों का इस्तेमाल करते रहे हैं लेकिन अब पहले से बहुत ज्यादा लोग दैनिक व्यवसाय के रूप में इस काम को कर रहे हैं। कचरा बीनने वालों को अपने काम का वाजिब मेहनताना नहीं मिलता और उन्हें अकसर स्वास्थ्य के लिए खतरनाक और हानिकारक स्थानों पर काम करना पड़ता है। लेकिन यह भी सही है कि ५ाहर और बड़े-बड़े व्यवसाय कचरे को ठिकाने लगाने और रीसाइक्लिंग से बनी चीजों की आपूर्ति सुनि६चित करने के लिए उन्हीं पर निर्भर रहते हैं। कहने का मतलब यह है कि रीसाइक्लिंग उद्योग अच्छा-खासा पैसा बनाता है, इसकी वजह से नगरपालिकाओं को कचरे के निस्तारण पर खर्चा नहीं करना पड़ता लेकिन इस कमाई में से कचरा बीनने वालों को कोई हिस्सा नहीं मिलता।

कचरा बीनने वाले कहां काम करते हैं

५ोधकर्ताओं ने केपटाउन के तीन ऐसे इलाकों पर ध्यान दिया जहां कचरा बीनने वाले काम करते हैं। ये स्थान थे - सॉल्ट रीवर-वुडस्टॉक, खायेलित६ाा एवं फिलीपी-गुगुलेतू।

सॉल्ट रीवर-वुडस्टॉक एक औद्योगिक क्षेत्रा है जो ५ाहर के केंद्र को घेरे हुए हैं। यह एक ट्रेन जंक६ान है इसलिए ५ाहर भर के लोग यहां के बाई-बैक सेंटरों पर अपना कचरा बेचने आते हैं। यहां हमे६ाा गरीबी और भीड़-भाड़ रही है लेकिन हाल ही में इसे "सुधार" जिले के रूप में चुना गया है। इसका मतलब यह है कि अब ज्यादा पैसे वाले लोग और बड़े कारोबारी भी इस इलाके में आने लगे हैं जिससे यहां के किराए बढ़ गए हैं। जिन लोगों के पास ज्यादा पैसे नहीं है उनके लिए अब यहां रहना मुि६कल होता जा रहा है। जो लोग ऐसी झुग्गियों या इमारतों में रह रहे हैं जिनका किराया वे नहीं चुका सकते उनको इलाके से बाहर धकेला जा रहा है। ऐसे बहुत सारे लोग सड़कों पर रहने लगे हैं। जैसा कि

एक व्यक्ति ने बताया : “मैं निर्माण उद्योग में काम करता था और आप सामने जो इमारतें देख रहे हैं इनमें से ज्यादातर मेरे हाथ से बनी हैं.. .। आज मेरे पास ही सिर छिपाने का ठिकाना नहीं रहा।”

खायेलित्६ाा केपटाउन की सबसे बड़ी कॉलोनी है जो ५ाहर के मध्य व्यावसायिक क्षेत्रा से लगभग 35 किलोमीटर दूर है। यहां ज्यादातर लोग गरीबी की रेखा से नीचे हैं। वे माचिस जैसे छोटे-छोटे घरों, सस्ते आरडीपी मकानों और रीसाइक्लिंग योग्य पदार्थों से बनी झुग्गियां में रहते हैं। यहां बहुत सारे लोगों के पास नौकरियां नहीं हैं इसलिए वे कचरा बीनने और बागवानी जैसे कामों से अपना गुजारा चलाने लगे हैं।

फिलीपी-गुगुलेतू दक्षिण अफ्रीका के सबसे पुराने ५ाहरों में से एक है। यह केपटाउन हवाई अड्डे के बहुत नजदीक है। यह भीड़ भरा इलाका है और यहां की जीवन परिस्थितियां काफी खराब हैं। लोगों की मदद के लिए यहां बहुत सारे अनौपचारिक संगठन, समुदाय, चर्च और गैर-सरकारी संगठन सक्रिय हैं।

५ोधकर्ताओं ने इन सभी इलाकों में सर्वेक्षण और साक्षात्कार लिए थे लेकिन गहन अध्ययन के लए उन्होंने फिलीपी-गुगुलेतू इलाके को ही चुना। ५ोधकर्ताओं ने बाई-बैक सेंटर मालिकों यानी कचरा व्यापारियों, बाई-बैक सेंटरों में काम करने वाले मजदूरों, एकल कचरा बीनने वालों और कचरा बीनने वाले दंपत्तियों से कुल मिलाकर 75 साक्षात्कार लिए। फिलीपी में ५ोधकर्ताओं ने महिला कामगारों और संगठित समूहों से भी साक्षात्कार लिए।

कचरा बीनने वाले कैसे काम करते हैं?

पुरु८ा और महिलाएं अलग-अलग तरह काम करते ह

कचरा बीनने वालों में पुरु८ाों और महिलाओं के काम अलग-अलग दिखाई देते हैं। केपटाउन में ज्यादातर कचरा बीनने वाले पुरु८ा हैं। धातु, टायर, तांबा और स्टील जैसी भारी, औद्योगिक उपयोग वाली चीजें प्रायः पुरु८ा और लड़के ही इकट्ठा करते हैं। वे सुपर मार्केट ट्रॉलियों, अपनी बनाई रेहड़ियों, घोड़े तांगों या कूड़ेदानों में इन चीजों को भरकर उन्हें बाई-बैक सेंटरों पर ले जाते हैं या उन्हें “बक्की” नामक छोटे ट्रकों में ढोते हैं। इसका मतलब यह है कि ज्यादा कीमती चीजें पुरु८ाों के हाथ आती हैं और वे महिलाओं के मुकाबले ज्यादर पैसा कमा पाते हैं। उनकी आमदनी औसतन 100 रुपये रोजाना तक रहती है।

कागज, प्लास्टिक, कपड़े और कांच की बोतलें आदि महिला कचरा कामगारों के लिए छोड़ दी जाती हैं। कुछ महिलाएं, खासतौर से खायेलीत्६ाा में कुछ कचरा बीनने वालियां ऐसे कपड़े इकट्ठा करती हैं जिससे उन्हें सिलाई जैसे व्यवसाय चलाने में मदद मिलती हैं। जो महिलाएं पुरु८ाों के साथ काम नहीं कर रही हैं वे अपनी चीजों को खुद लेकर सेंटरों पर जाती हैं। कई बार वे पीठ पर बच्चों को भी लिए रहती हैं और उनके कचरे का बोझ प्रायः काफी होता है। कई महिला कामगार पुरु८ाों के मुकाबले कम समय के लिए काम करती हैं क्योंकि उन्हें अपने परिवार और घरेलू काम भी संभालने पड़ते हैं। वे कम समय कचरा बीनती हैं इसलिए कम कचरा बीन पाती हैं और उन्हें कम मूल्यवान चीजें मिलती हैं इसलिए पुरु८ाों के मुकाबले उनकी आमदनी काफी कम रहती है। महिलाओं में से कई की आय 10 रुपये रोजाना भी नहीं हो पाती है। उनकी औसत आय 50 रुपये रोजाना रहती है। कुछ बाई-बैक सेंटरों में महिलाओं को जाने भी नहीं दिया जाता है बल्कि उनकी जगह पुरु८ा ही भीतर जाते हैं। कोई नहीं बता सकता कि ऐसा क्यों है। पर ऐसा लगता है कि पुरु८ा कचरा बीनने वाले महिला कामगारों को कमजोर मानते हैं इसलिए उनके लिए कुछ खास तरह के कामों को ही सही मानते हैं।

लोग कचरा क्यों बीनते हैं?

लोग कई कारणों से कचरा बीनते हैं:

- उनको नौकरी से निकाल दिया गया है
- वे कोई और काम नहीं ढूंढ सकते
- अपनी पार्टटाइम नौकरी के साथ अतिरिक्त आय के लिए
- परिवारों का पेट पालने के लिए
- सामाजिक सुरक्षा पें६ान के अलावा अतिरिक्त आय के लिए
- वे सामाजिक सुरक्षा व्यवस्था से बाहर हैं
- उनके पास कभी भी औपचारिक नौकरी नहीं थी
- उन्हें अपने घर में इस्तेमाल के लिए चीजों की तला६ा है।

कचरा बीनने वाले कौन हैं?

हालांकि आमतौर पर ये बेहद गरीब लोग हैं लेकिन इनमें विविधता बहुत ज्यादा है :

- अफ्रीकी और मिश्रित रंग वाले दक्षिण अफ्रीकी, कुछ ५वेत दक्षिण अफ्रीकी और अन्य अफ्रीकी दे६ाों से आए प्रवासी
- 9-10 साल की उम्र के बच्चे
- युवा और अधेड पुरु८ा
- महिलाएं, खासतौर से अकेली माएं
- ऐसी महिलाएं जो ६िाक्षा और बेहतर जिंदगी की उम्मीद में ग्रामीण इलाके से अपने परिवार को लेकर यहां आ गई हैं
- अस्सी साल तक के बूढ़े पुरु८ा व महिलाएं।

दिन का हिसाब

ज्यादातर कचरा कामगार नगरपालिका संग्रह, ५ादियों और नामकरण आदि समारोहों के दिनों में ज्यादा काम करते हैं। कुछ कचरा बीनने वालों ने दैनिक सड़कें, इलाके और रास्ते तय किए हुए हैं जबकि कई लोग किसी एक इलाके में टिक कर काम नहीं करते। कुछ कामगार वहीं रहते हैं जहां वे काम करते हैं। वे प्रायः सड़कों पर रहते हैं जबकि कई लोग अन्य बस्तियों से सॉल्ट रीवर-वुडस्टॉक इलाके में आते हैं क्योंकि यहां ज्यादा बेहतर कीमत की उम्मीद रहती है।

कचरा बीनने वाले एक औसत कामगार के मुकाबले एक दिन में ज्यादा घंटों तक काम करते हैं। इनमें से कुछ लोग पूरे दिन लगातार काम में लगे रहते हैं। कई लोग सुबह सवेरे काम करते हैं और ५ााम को औपचारिक कामगारों के घर लौट जाने पर फिर काम करने लगते हैं। कुछ महिलाएं और बूढ़े कचरा कामगार दो-चार महीने तक बोतलें इकट्ठा करते रहते हैं और बाद में संगठनों को बोतलें दे देते हैं जिनके बदले उन्हें 1000 रुपये तक मिल जाते हैं।

आधे कचरा कामगार अकेले काम करते हैं जबकि आधे लोग जोड़ों में या समूह में काम करते हैं। कई बार गर्ल फ्रेंड और ब्वाय फ्रेंड भी साथ में काम करते हैं। समूह अकसर अनौपचारिक होते हैं। उनके बीच कोई तय नियम नहीं होते और उनमें 4-10 लोग तक हो सकते हैं। ये लोग साथ घूमते हुए कचरा बीनते हैं और अपनी कमाई को एक साथ रखते हैं। इसके बाद सबके बीच बराबर-बराबर हिस्सों में कमाई बांट दी जाती है ताकि कोई झगड़ा न हो। खायेलित्६ाा में बूढ़ी औरतें तो समूह के ऐसे सदस्यों को भी अपनी आमदनी में से हिस्सा देती हैं जो औरों की देखभाल कर रहे हैं

कचरा बीनने वालों की मुश्किलें

कचरा बीनने वालों को बहुत खतरनाक कार्य परिस्थितियों में काम करना पड़ता है :

- स्वास्थ्य संबंधी खतरे
  - विषैला और इंसानी कचरा
  - मरे हुए जानवर
  - जूठा खाना
  - कांच
  - न्यूमोनिया जैसी बीमारियां जो खराब स्थितियों से फैलती हैं।
- मौसम
  - भारी गर्मी
  - बरसात
- हिंसा
  - इलाके में दबदबे और चोरी जैसी घटनाओं के कारण चाकूबाजी आदि
  - बलात्कार
  - चोरी

ज्यादातर कचरा बीनने वालों की जीवन परिस्थितियां भी कार्य परिस्थितियों से बेहतर नहीं हैं :

- बहुत सारे कचरा बीनने वाले सड़कों पर सोते हैं
- जिनके पास रहने की जगह है उनके पास भी अकसर पीने के पानी और शौचालय की सुविधा नहीं है
- ज्यादातर भीड़ भरे स्थानों में रहते हैं जिससे बीमारियां फैलती रहती हैं।

कुछ कचरा बीनने वाले नशीली दवाओं और शराब के भी आदी हैं:

- सॉल्ट रीवर-वुडस्टॉक में एक कचरा बीनने वाले ने बताया कि कुछ सामुदायिक परियोजनाओं को इसलिए खदेड़ दिया गया क्योंकि "यहां बहुत उथल-पुथल है...। कचरा बीनने वाले नशीली दवाएं लेते हैं और कई बार वे बहुत बदतमीजी से पेश आते हैं।"

कचरा बीनने वालों को तरह-तरह के लोग भी खूब तंग करते हैं :

- पुलिस और निजी सुरक्षा कंपनियां
  - लगभग रोज ही कचरा बीनने वालों को बेवजह पूछताछ के लिए पकड़ लिया जाता है
  - कचरा बीनने वालों पर चोरी के आरोप लगाए जाते हैं
  - बाई-बैक सेंटरों के आसपास से कचरा बीनने वालों को खदेड़ने के लिए पुलिस बुला ली जाती है
- मकान मालिक
  - कचरा बीनने वालों को अकसर आवारा, भिखारी या फालतू भी कहा जाता है।
- नगर प्रशासन
  - एक नगर पार्षद ने कचरा बीनने वालों के एक संगठन को अपनी इमारत से जबरन बाहर निकाल दिया था।
- अन्य कचरा बीनने वाले
  - कचरा बीनने वालों के बीच एक-दूसरे पर शक, शिकायतों और हिंसा की वारदातें बहुत ज्यादा होती हैं।
- बाई-बैक सेंटरों के मालिक और प्रबंधक
  - एक बाई-बैक सेंटर के मालिक ने कहा, "मैं इन्हें अच्छी तरह जानता हूं। वे यहीं सामने सोते हैं और पीते रहते हैं। मेरे पास उनके लिए न जाने कितने नाम हैं। आप उन्हें भिखारी या आवारा कहेंगे लेकिन मैं जब उखड़ जाता हूं तो उनको जो गालियां देता हूं उन्हें सुनकर आपके कानों से भी धुंआ निकलने लगेगा।"
  - कचरा बीनने वालों को बाई-बैक सेंटरों के आसपास जमा होने से रोकने के लिए इन सेंटरों के मालिक पुलिस को बुला लेते हैं।

या इतने बीमार हैं कि काम पर ही नहीं जा सकते। जैसा कि एक महिला ने बताया : "हम अपनी इन जरूरतों के लिए तो व्यक्तिगत रूप से इकट्ठा करते ही हैं लेकिन हम में से कोई बीमार है या जरूरत भर इकट्ठा नहीं कर पा रहा है तो उसको भी अपनी कमाई में हिस्सा देते हैं।"

कचरा बीनने वाले खुद को कैसे देखते हैं

कुछ कचरा बीनने वाले खुद को "'मजदूर" नहीं मानते। कई को लगता है कि वे "वक्त बर्बाद" कर रहे हैं और जैसे ही उन्हें सही नौकरी मिल जाएगी वे यह काम छोड़ देंगे। कुछ लोग इसे अतिरिक्त आय का साधन मानते हैं। लेकिन, ज्यादातर कचरा बीनने वाल खुद को मजदूर मानते हैं। मारकस नाम के एक कचरा कामगार ने कहा : "मैं मजदूर हूं क्योंकि मैं हर रोज किसी भी और मजदूर की तरह काम पर जाता हूं। मैं यह नहीं कहूंगा कि मैं मटरगश्ती के लिए जाता हूं बल्कि मैं काम करने के लिए जाता हूं। ये ईमानदारी की कमाई है इसलिए इसे मजदूरी मानने में कोई हर्जा नहीं है।" बहुत सारे मजदूरों ने कहा कि वे बहुत मेहनत करते हैं, उन्होंने खुद अपनी जिंदगी चलाई है और वे ईमानदारी से अपना काम कर रहे हैं।

रीसाइक्लिंग उद्योग कचरा बीनने वालों से कैसा बर्ताव करता है

बाई-बैक सेंटर कचरा बीनने वालों से कितना माल खरीदते हैं इस आधार पर इन केंद्रों के बीच फर्क देखा जा सकता है। सॉल्ट रीवर-वुडस्टॉक इलाके के कुछ बाई-बैक सेंटरों के मालिकों ने बताया कि वे कचरा बीनने वालों से कुछ खास नहीं खरीदते बल्कि ज्यादातर बड़ी स्टील और कागज कंपनियों से माल खरीदते हैं। कई दूसरे सेंटरों के मालिकों ने कहा कि 2008 में आए अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संकट के बाद बड़ी कंपनियों के साथ चला आ रहा व्यवसाय कम हो गया है और पूरे रीसाइक्लिंग उद्योग में बहुत सारी नौकरियां खत्म हो गई हैं जिसकी वजह से बहुत सारे नए लोग कचरा बीनने लगे हैं। बाई-बैक सेंटरों के मालिकों का कहना है कि दोनों ही सूरतों में की बड़ी कंपनियां कीमतें तय करती हैं और कचरा बीनने वालों के पास सौदेबाजी की ज्यादा गुंजाइश नहीं होती। लेकिन ये भी सच है कि बाई-बैक सेंटर बड़ी कंपनियों के साथ बेहतर कीमत के लिए जम कर सौदेबाजी करते हैं जिसकी वजह से ज्यादातर कचरा बीनने वालों को लगता है कि बाई-बैक सेंटर उनके दम पर मुनाफा कमा रहे हैं।

कचरा बीनने वालों को रीसाइक्लिंग की "मूल्य शृंखला" का अहम हिस्सा नहीं माना जाता है। जैसा कि एक बाई-बैक सेंटर के मालिक ने कहा कि वह "नलसाजों, कंपनियों - सबसे" माल खरीदता है। लेकिन उसने इस फेहरिस्त में कचरा बीनने वालों को नाम नहीं लिया। कहने का मतलब ये है कि कचरा बीनने वाले इस मूल्य शृंखला की सबसे निचली पायदान पर बहुत कठोर और खतरनाक काम कर रहे हैं। वे बड़ी कंपनियों को जरूरत की चीजें मुहैया कराते हैं जिससे कंपनियों की लागत बचती है और उनका मुनाफा बढ़ता है। लेकिन कचरा बीनने वालों को मजदूर या रीसाइक्लिंग उद्योग का हिस्सा नहीं माना जाता है। न तो उनको वाजिब मजदूरी मिलती है और न ही उनके साथ अच्छा बर्ताव होता है। उनको कोई स्वास्थ्य संबंधी सुविधाएं या सामाजिक सुरक्षा भी नहीं मिलती। कचरा बीनने वालों के पास इस तरह के बर्ताव से निपटने का कोई रास्ता नहीं है। बाई-बैक सेंटरों पर अपना माल बेचने के लिए उनके पास पहचान के दस्तावेज होना जरूरी होता है। अगर उनके पास पहचान के दस्तावेज नहीं होते हैं या वे बाई-बैक सेंटरों से अच्छे ताल्लुकात नहीं बना पाए हैं तो भी कई बार बाई-बैक सेंटरों के मालिक उनका कचरा खरीद लेते हैं। अगर किसी कचरा बीनने वाले की बाई-बैक सेंटरों के मालिक से बिगड़ जाती है तो वे अपना माल नहीं बेच सकते और उन्हें अपना गुजारा चलाने के लिए पैसा नहीं मिल पाता।

संगठनीकरण की संभावनाएं

हालांकि कचरा बीनने वालों की सहायता के लिए बुनाई-कढ़ाई, स्वास्थ्य और पो८ाण जैसी कुछ आयवर्धक परियोजनाएं चलाई जा रही हैं लेकिन ऐसी परियोजनाएं बहुत कम हैं जो कचरा बीनने वालों को संगठित करने पर ध्यान देती हैं। इसकी बजाय ये लोग किसी दूसरी परियोजना के लिए कचरा बीनते हैं। उदाहरण के लिए, फिलीपी में एक सिलाई समूह सिलाई परियोजनाओं के लिए कपड़े बीनता है। यहां कुछ औपचारिक संगठन हैं जो कचरा बीनने वालों की कार्य परिस्थितियों में सुधार पर जोर दे रहे हैं। काम और आय के बंटवारे के लिए बहुत सारे छोटे अनौपचारिक समूह बने हुए हैं। हालांकि ये छोटे समूह "स्वसंगठित" हैं लेकिन उनके पास बेहतर कार्य परिस्थितियों और बाई-बैक सेंटरों में बेहतर मोलभाव की ताकत नहीं है। उनको खुद भी प्रायः सम्मानजनक आय के लिए ज्यादा से ज्यादा कचरा

इकट्ठा करने की जरूरत बनी रहती है।

बहरहाल, कम से कम दो सामुदायिक संगठन ऐसे हैं जिनमें कचरा बीनने वाले महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। त्सोगा नामक एक संगठन पार्कों की हरियाली, खाद्य पदार्थों की बागवानी, नर्सरी, सिलाई-कढ़ाई और कांच की रीसाइक्लिंग जैसी परियोजनाओं पर सक्रिय है। अब त्सोगा को चालू रखने के लिए भी कचरा बीनने वालों को ५ासन से जूझना पड़ रहा है। फिलीपी में महिला कचरा कामगार एसपीसीए की कार्टहॉर्स एसोसिए६ान को चलाने के लिए नियमित रूप से साथ बैठती हैं। इस संगठन का मकसद घोड़ा गाड़ियों को दुरुपयोग से बचाना है जिनका रीसाइक्लिंग में बड़े पैमाने पर इस्तेमाल होता है।

कुछ परियोजनाएं कचरा बीनने वालों को प्रत्यक्ष रूप से मदद देने के लिए चलाई जा रही हैं लेकिन कचरा बीनने वाले कोऑपरेटिव बनाने में ज्यादा दिलचस्पी ले रहे हैं। उनको लगता है कि कोऑपरेटिव बन जाने से बाई-बैक सेंटरों की धौंस खत्म हो जाएगी और "अगर कचरा कामगार संगठित हों तो उनके सामने ज्यादा बेहतर अवसर होंगे"। बहुत सारे लोगों ने इस बात में भी रुचि दिखाई कि दुनिया के दूसरे हिस्सों में इस काम को किस तरह संगठित किया जा रहा है ताकि वे भी अपने हालात बदल सकें। मारकस नाम के एक कचरा कामगार ने कहा : "मैं चाहता हूं कि सारे कचरा बीनने वाले एकजुट हों, आपस में मिलकर काम करें और एक-दूसरे को चीजें सिखाएं ताकि वे बेहतर भवि८य गढ़ सकें मैं जिंदगी भर कचरा बीनते-बीनते नहीं मरना चाहता।"

नि८कर्८

यहां सबसे महत्वपूर्ण सवाल ५ायद यह है कि : क्या लोग कचरा बीनने के व्यवसाय के आधार पर संगठित होना चाहते हैं? लोग रोजगार सुरक्षा और बेहतर जिंदगी चाहते हैं लेकिन मारकस की तरह कचरा बीनते-बीनते नहीं मरना चाहते। केपटाउन में जिन कचरा बीनने वालों से साक्षात्कार लिए गए उनमें से ज्यादातर का कहना था कि अगर उन्हें मौका मिला तो वे कोई और काम करना चाहेंगे। इसका मतलब है कि उनको संगठित करने की चे८टा इस बात पर केंद्रित होनी चाहिए कि इससे उनके दैनिक जीवन की जद्दोजहद खत्म हो जाएगी और उन्हें स्थिर रोजगार व आवास मिल पाएगा। महिलाओं को इस व्यवसाय में हो रहे लैंगिक अन्याय के इर्द-गिर्द भी संगठित किया जा सकता है। कचरा बीनने वालों को मारपीट और पुलिस की हिंसा से बचाने के सवाल पर भी संगठित किया जा सकता है जिस तरह सेक्स वर्कर्स और रेहड़ी वालों को संगठित किया गया है। उनको संगठित करने का एक तरीका यह हो सकता है कि कचरा बीनने वालों, बाई-बैक सेंटरों के मजदूरों और "बक्की" चालकों को इकट्ठा किया जाए। यानी सबसे पहले ऐसे लोगों को एकजुट करने पर जोर दिया जाना चाहिए कि जिनकी नौकरियां और हित एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं और जो ये मानते हैं कि रीसाइक्लिंग उद्योग में श्रम और पैसे के विभाजन की पद्धति में बदलाव लाना जरूरी है। ऐसे में उनके लिए मिलकर काम करना आसान हो सकता है। जैसे-जैसे ज्यादा से ज्यादा लोगों को नौकरियों से निकाला जा रहा है वैसे वैसे 'श्रम' और कार्य स्थल की अवधारणा भी बदलती जा रही है। ज्यादा से ज्यादा लोग रोजगार असुरक्षा, भूखमरी ओर दयनीय जीवन परिस्थितियों से जूझ रहे हैं। कचरा बीनने वालों जैसे अनौपचारिक कामगार ये सीखने में औरों के लिए एक उदाहरण पे६ा कर सकते हैं कि खुद को संगठित करके अपनी कार्य परिस्थितियों और जीवन में कैसे सुधार लाया जा सकता है।

इस पाठ और मूल प्रका६ान का पीडीएफ संस्करण यहां देखें www.wiego.org या www.inclusivecities.org/toolbox.html

WIEGO
Women in Informal Employment
Globalizing and Organizing